IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

उमरिया जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाएँ

डॉ. संदीप सिंह
शासकीय शिल्फिली कालेज, सूरजपुर, (छ.ग.)

शोध–सारांशः

भारत प्राचीन सभ्यताओं वाला देश है। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहाँ पर सभी धर्मों, वर्गों, जातियों और विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ मिलकर रहते हैं, जो एकता एवं शांति का प्रतीक है। हमारे देश में सारे संसार की झलक देखी जा सकती है, इसी कारण क्रेसी महोदय ने इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा प्रदान की है। हमारा देश आरंभ से विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस देश में 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।[1] इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु शोध पत्र में विवेचित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्दः उमरिया, पारिस्थितिकी, पर्यटन, ग्रामीण, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, स्थल, विदेशी आध्यात्मिकत संभावनाएँ इत्यादि।

संदर्भ

[1]. सिंह बी.पी. एवं सिंह सुमन्त (2000) मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन बीना, पेज–2
[2]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54 अंक–7 मई 2008 पृष्ठ 12
[3]. पाण्डे, गिरीश चन्दा, अतुल्य भारत में ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54, अंकदृ7 मई 2008 पृष्ठ 1
[4]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–2
[5]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष 54, अंक–7 मई 2008 पृष्ठ–12
[6]. कोरी, राजबहादुर (2006)बघेलखंड में पारिस्थितिकी पर्यटन, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा।
[7]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा–4
[8]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–5
[9]. अवस्थी एन.एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[10]. अवस्थी एन. एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[11]. सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठदृ31 12 सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठ–31
[12]. Toylor E.B. (1946) Anthropolgy, Volume Ist and IInd, Thin Kers Library, Watts and Co-London.
[13]. कोचर, पी.एल. (1983) पादप पारिस्थितिकी, रतन प्रकाशन, मंदिर इन्दौर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

[14]. Bharadwaj, S.M. (1973) Hindu places of Pilgrimage in India, Thompson Press Ltd. Delhi.

[15]. Dattar, B.N- (1981) Himalayan Pilgrimages, Publication Division New Delhi.

[16]. Kaur, J. (1979) Bibiographical sources for Himalayan pilgrimages and Tourism studies in uttarakhand, Tourism recreation research Journal, Lucknow, vol. IV No. 01